Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

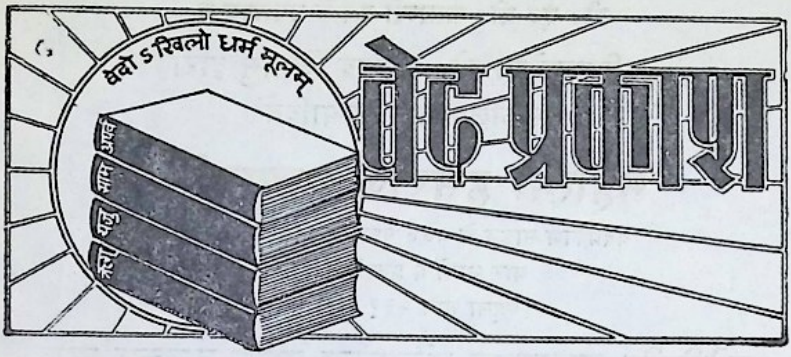

जन्म शताब्दी वर्ष

लगभग ६० वर्ष पूर्व पिता श्री गोविन्दराम जी ने सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशित कर गोविन्दराम हासानन्द प्रकाशन संस्थान की नींव रखी थी। गोविन्दराम हासानन्द संस्थान ने वैदिक (आर्य) साहित्य के प्रकाशन का जो बीड़ा उठाया था, उसे भली-भाँति निभाते हुए ६० वर्ष से अधिक समय हो गया। आर्यसमाज की पुस्तकों के माध्यम से इस संस्थान को सारे विश्व में अलग से पहचाना जाता है। इसके प्रकाशन सुरुचिपूर्ण ढंग से प्रकाशित किए जाते रहे हैं। आगे भी यह परम्परा बनी रहे, ऐसा हमारा प्रयत्न रहेगा।

१९८६ का वर्ष स्व० श्री गोविन्दराम जी का जन्म-शताब्दी वर्ष है। इस वर्ष को हम विशेष रूप से मनाने जा रहे हैं। सत्यार्थ प्रकाश का एक सुन्दर संस्करण हम आधुनिकतम प्रिंटिंग तकनीक से प्रकाशित करने की योजना बना रहे हैं। अगले वेदप्रकाश के अंकों में इसकी सूचनाएँ देते रहेंगे।

इसी १९८६ में डी० ए० वी० कालेज कमेटी अपना शताब्दी वर्ष मना रही है। इस अवसर पर हम महात्मा हंसराज की ग्रन्थावली प्रकाशित कर रहे हैं। इसमें महात्मा जी का खोजपूर्ण जीवनचरित तथा उनके लेखों, उपदेशों तथा पुस्तकों का संकलन होगा। इस कार्य का सम्पादन-संकलन किया है आर्य जगत् के खोजी लेखक श्री राजेन्द्र जिज्ञासु ने। आशा करते हैं कि अगस्त में सम्पूर्ण ग्रन्थावली चार भागों में छप कर तैयार हो जायेगी।

इसी प्रकार और योजनाएँ भी हैं जिनकी सूचनाएँ 'वेदप्रकाश' में समय-समय पर दी जाती रहेंगी।

मेरी यह इच्छा है कि इन सब योजनाओं की जानकारी पाने के लिए आप 'वेदप्रकाश' के ग्राहक बनें। अपने इष्ट मित्रों तथा बन्धु-बान्धवों को वेदप्रकाश का ग्राहक बनायें या आप उन्हें कम-से-कम एक वर्ष तक अपनी ओर से मूल्य भेज कर उपहार रूप में भेजने का हमें आदेश दें। आपका यह सहयोग हमें आर्य साहित्य के प्रचार-प्रसार में बल देगा।

—विजय कुमार

गोविन्दराम हासानन्द, नई सड़क, दिल्ली-६

CC-0. Vedic Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

डी० ए० वी० शताब्दी-वर्ष के उपलक्ष्य में

इतिहासवेत्ता प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु द्वारा
संकलित तथा सम्पादित

महात्मा हंसराज ग्रन्थावलि

वेदप्रकाश साइज के ८०० पृष्ठों से अधिक पृष्ठों में
चार भागों में प्रकाशित होगी
पहला भाग २३१ पृष्ठों में

तपोनिधि महात्मा हंसराज और उनका युग

छपकर तैयार मूल्य ६०.००

पूरा सैट—चारों खण्डों का मूल्य २४०.००
३० अगस्त तक चारों खण्ड छपकर तैयार होंगे
प्रकाशन से पूर्व ३० अगस्त तक पूरे सैट का १५० मूल्य। शीघ्र ग्राहक बनें।

स्व० श्री गोविन्दराम जी की जन्मशती के उपलक्ष्य में

एक और रियायत

३० अगस्त १९८६ तक

महात्मा हंसराज ग्रंथावली

का मूल्य भेज देने वाले ग्राहकों को

पं० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

की बहुचर्चित पुस्तक

सत्य की खोज

मूल्य ५०.००

बिल्कुल मुक्त

इस प्रकार २४०+५०=२९० रु० की पुस्तकें केवल १५०-०० में
(सुन्दर छपी आकर्षक सजिल्द बंधी पुस्तकें)

गोविन्दराम हासानन्द, नई सड़क, दिल्ली-११०००६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेदप्रकाश

संस्थापक : स्वर्गीय श्री गोविन्दराम हासानन्द

वर्ष ३५, अंक १२] वार्षिक मूल्य : दस रुपये [जुलाई १९८६

सम्पा० : विजयकुमार आ० सम्पादक : **स्वा० जगदीश्वरानन्द सरस्वती**

सम्पादकीय

इस अंक के साथ 'वेदप्रकाश' अपने जीवन के ३५ वर्ष पूर्ण कर रहा है। इन ३५ वर्षों में 'वेदप्रकाश' ने कितनी सामग्री पाठकों को दी है, इस तथ्य से सभी परिचित हैं। अन्य पत्रिकाओं को तो पाठक पढ़कर रद्दी में बेच देते हैं परन्तु 'वेद-प्रकाश' की जिल्दें बँधवाकर सुरक्षित रखते हैं।

पिछले कई वर्षों से 'वेदप्रकाश' का प्रत्येक अंक छोटे रूप में ही सही, एक विशेषाङ्क ही होता है। सारा अंक एक विद्वान् द्वारा एक ही विषय पर लिखा जाता है। इन लेखों की जो उपयोगिता आज है वही आज से सैकड़ों वर्ष पश्चात् भी रहेगी, क्योंकि ये लेख सामयिक न होकर सैद्धान्तिक होते हैं।

छोटे अंकों के अतिरिक्त प्रतिवर्ष एक बृहद् अंक भी दिया जाता है। गत वर्षों में हमने 'ऋषि बोध कथा' और 'ईश्वर का स्वरूप' अंक दिये थे। इस वर्ष हम वेदांक दे रहे हैं। इस अंक में क्या होगा इसकी सूचना अगले पृष्ठ पर दी हुई है।

'वेदप्रकाश' का वार्षिक शुल्क अत्यन्त अल्प है—केवल १० रुपये। इस १० रुपये में हम लगभग ३०० पृष्ठ की ठोस सामग्री देते हैं। पुस्तकरूप में इतने बड़े ग्रन्थ का मूल्य ५० रुपये से कम नहीं हो सकता।

अपना वार्षिक मूल्य आज ही भेजिए। स्मरण रहे, विशेषांक सीमित संख्या में छप रहा है और केवल उन्हीं ग्राहकों को भेजा जाएगा, जिनका वार्षिक मूल्य २ अगस्त तक प्राप्त हो जाएगा।

देश की परिस्थिति—अपनी अदूरदर्शिता और तुष्टिकरण की नीति के कारण आज सारा भारत जल रहा है। पञ्जाब की समस्या विकट है। हिन्दुओं पर अत्याचार हो रहे हैं, प्रतिदिन निर्दोष व्यक्तियों की हत्याएँ हो रही हैं, उन्हें पञ्जाब छोड़ने के लिए विवश किया जा रहा है। मिजोरम, नागालैण्ड, मणिपुर में ईसाइयत बढ़ रही है। अहमदाबाद की स्थिति भी अच्छी नहीं है। इस हिन्दु का क्या बनेगा ? हिन्दुओ ! जागो ! आपके पत्थर के भगवान् आपकी सहायता

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नहीं करेंगे। पहले भी इन्होंने कभी आपकी सहायता नहीं की। आज स्वयं खड़े हो जाओ! महापुरुषों से प्रेरणा लो! मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम धनुर्धारी थे, श्रीकृष्ण चक्रसुदर्शनधारी थे, भीम गदाधारी थे, हनुमान् भी गदाधारी थे, काली के पास खाँडा है, दुर्गा के पास तो अनेक अस्त्र-शस्त्र हैं, परशुराम के पास फरसा [परशु] है। आप भी शस्त्रधारी बनो! प्रातः उठो, अपने पुत्रों को व्यायाम-शालाओं में भेजो, इन्हें अस्त्र और शस्त्र-संचालन का प्रशिक्षण दो!

हिन्दु केवल पैसा कमाने में लगा हुआ है। पैसा कमाओ परन्तु इस पैसे की रक्षा कैसे होगी, यह भी तो सोचो!

सारे हिन्दु यदि एकसाथ मिल जाएँ तो सरकार को भी हिला सकते हैं और अपनी सुरक्षा भी कर सकते हैं।

बहुत सो चुके, उठो! उठो, कुछ करने और मरने के लिए तैयार हो जाओ!

जगदीश्वरानन्द

वेदप्रकाश का बृहद् विशेषांक

जुलाई मास में 'वेदप्रकाश' अपने जीवन के ३५ वर्ष पूर्ण कर छत्तीसवें वर्ष में पदार्पण करेगा। अगस्त मास में श्रावणी पर्व के उपलक्ष्य में हम अपने पाठकों को दे रहे हैं—

वेद ज्योति विशेषांक

इस अंक के लेखक हैं—श्री धर्मदेव जी 'मनीषी' वेदमार्तण्ड, सहायक आचार्य गुरुकुल कालवा। इस अंक में वेद सम्बन्धी निम्न लेख होंगे—

१. वेद में ओम् महिमा
२. वेद में गुरुमन्त्र
३. वेद में ब्रह्मचर्य महिमा
४. वेद में योगविद्या
५. वेद में यज्ञविद्या
६. वेद में यज्ञोपवीत का विधान
७. वेदों में चरित्रनिर्माण
८. वेदों में 'आर्य' शब्द के अनेक अर्थ
९. वेदों में सृष्टिकाल-विभाग
१०. वेदों में छह दोषों के त्याग का उपदेश, आदि

यह अंक 'वेदप्रकाश' के (डिमाई) आकार के ८० पृष्ठों का होगा। पुस्तक रूप में इस अंक का मूल्य १०.०० होगा परन्तु वेदप्रकाश के ग्राहकों को केवल १०.०० वार्षिक शुल्क भेजने पर यह विशेषांक तो मिलेगा ही, साथ ही एक वर्ष तक वेद-प्रकाश भी मिलता रहेगा।

शीघ्रता कीजिए। अपना वार्षिक शुल्क शीघ्र भेजिए।

—जगदीश्वरानन्द सरस्वती

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

साहित्य प्रकाशन की दिव्य योजना

वेद हमारी संस्कृति के मूलाधार हैं। वेद परमात्मा की दिव्यवाणी हैं। वे हमारे प्राण और जीवन-सर्वस्व हैं। प्राचीन और अर्वाचीन ऋषि-मुनियों ने वेदों की महिमा के गीत गाये हैं। महर्षि मनु ने कहा है—**वेदश्चक्षुः सनातनम्** [मनु० १२।९४]—वेद मानवमात्र के लिए सनातन चक्षुः हैं। भागवतपुराण में कहा है—**वेदो नारायणः साक्षात्** [६।१।४०]—वेद साक्षात् भगवान् ही है। गरुड़पुराण में कहा है—**वेदाच्छास्त्रं परं नास्ति** [गरुड़० उ० ख० ब्र० का० १०।५५]—वेद से बढ़कर संसार में कोई शास्त्र नहीं है। तुलसीदासजी ने भी लिखा है—**बन्दउ चारिउ वेद** [मानस० बाल० १४ ङ०]—मैं चारों वेदों की वन्दना करता हूँ। आधुनिक युग में महर्षि दयानन्द ने लिखा है—**"वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।"**

पौराणिक और सनातनियों का तो वेद की ओर ध्यान ही नहीं है। जिन आर्यों का वेद परम धर्म है वे भी वेद के प्रति उदासीन हैं। आर्यबन्धुओं का ध्यान भवनों, गुरुकुलों और डी० ए० वी० स्कूलों की ओर है, उनकी रुचि वाचनालय और चिकित्सालय खोलने की ओर है।

आर्यबन्धुओ ! महर्षि ने आर्यसमाज की स्थापना योग और वेद के प्रचार के लिए की थी। योग में हम नितान्त शून्य हैं। वेद के विषय में अत्यन्त अल्प कार्य हुआ है। आर्यसंस्थाओं द्वारा छपे सभी वेद महा अशुद्ध हैं, घटिया जिल्द, कागज भी हल्का। दयनीय दशा है वेदों के प्रकाशन की।

सन् १९८४ में १३० दिन की अदर्शन और मौन साधना करते हुए प्रभु-प्रेरणा से मैंने चारों वेदों के शुद्धतम प्रकाशन का संकल्प लिया है। इसके लिए मेरी एक योजना है। मैंने एक ट्रस्ट बना दिया है। इस ट्रस्ट की रूपरेखा साथ में संलग्न है।

योजना के अन्तर्गत ५०० रुपये एक बार या दो बार में देकर 'भगवती प्रकाशन' के सदस्य बन जाएँ। हम प्रतिवर्ष लगभग ५०० पृष्ठ का एक ग्रन्थ आपको देते रहेंगे। इसमें चारों वेद तो पाठकों को मिलेंगे ही, वेदों के भाष्य भी उपलब्ध होंगे। सत्यार्थप्रकाश का एक शुद्धतम और विशिष्ट संस्करण भी निकालना है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation Chennai

दिवंगत विद्वानों के ग्रन्थों का सर्वथा अभाव है। हम न जीवित अवस्था में अपने विद्वानों का आदर-सम्मान करते हैं और न मरने पर। आज शास्त्रार्थ-महारथी पं० मनसारामजी का कोई भी ग्रन्थ उपलब्ध नहीं है, पं० बुद्धदेवजी मीरपुरी को हमने भुला दिया, स्वा० दर्शनानन्दजी के ग्रन्थ-संग्रह भी आज उपलब्ध नहीं हैं। मैंने इन विद्वानों का श्राद्ध करने का निश्चय किया है इनके ग्रन्थों को छापकर।

क्या आप वेद की सुध लेंगे ? क्या वैदिक विद्वानों के ग्रन्थों के प्रकाशन में आप सहयोग देंगे ? भारत में इस समय लगभग पाँच सहस्र आर्यसमाजें हैं। इनमें से अधिकांश समाजों के भवन हैं। अनेक समाजों ने लाखों रुपये बैंक में जमा कराये हुए हैं। यदि सारे भारत में दो-चार सौ समाजें भी ५००-५०० रुपये के चार-चार, पाँच-पाँच ग्राहक बनाकर भेज दें तो वेद की बहुत बड़ी सेवा होगी। वैदिक विद्वानों का श्राद्ध भी हो जाएगा, साथ ही आपको भी प्रतिवर्ष एक आकर्षक ग्रन्थ जीवन-भर मिलता रहेगा।

यदि आपको वेदों के प्रति श्रद्धा है, महर्षि दयानन्द से प्रेम है, वैदिक विद्वानों की सेवाओं का कुछ भी ध्यान है तो आज ही बन्धु-बान्धवों को आर्ष ग्रन्थों के ग्राहक बनाकर राशि भेजें।

स्मरण रखिए—वेद का कार्य आर्यसमाज का कार्य है। वाचनालय और चिकित्सालय तो दादूपन्थी, कबीरपन्थी, रैदासी, गरीबदासी आदि भी खोल लेंगे, वेद का काम आर्यसमाज को ही करना है, अतः अपने कर्तव्य को समझिए।

अपना ड्राफ्ट 'भगवती प्रकाशन' के नाम से निम्न पते पर भेजें—

वेद सदन
एच १/२ माडल टाउन, दिल्ली-९

—स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती
मन्त्री

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ऋग्वेद के प्रथम सूक्त का स्वाध्याय

—पं० हरिशरण सिद्धान्तालङ्कार

अग्नि व रत्नधातम प्रभु का पूजन

अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्।
होतारं रत्नधातमम् ॥ (ऋग्वेद १।१।१)

अग्निम्=उस (अगि गतौ) सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को गति देने वाले—सब जीवों की उन्नति के साधक अग्रणी प्रभु को, ईळे=मैं उपासित करता हूँ, उस प्रभु का मैं पूजन करता हूँ। जो प्रभु पुरोहितम् (पुरः हितम्)=पहले से ही रखे हुए हैं अर्थात् जो बनने से, सृष्टि से पूर्व ही विद्यमान हैं। जो बने कभी नहीं, 'स्वयम्भू' हैं, अपने-आप होने वाले हैं। (खुद-आ) खुद आने वाले हैं अथवा जो प्रभु हम जीवों के (पुरः) सामने (हितम्) एक आदर्श के रूप में विद्यमान हैं। उनके अनुरूप हमें अपने को बनाना है

यज्ञस्य देवम्=वे प्रभु देववाणी द्वारा सब यज्ञों का—श्रेष्ठतम कर्मों का प्रकाश करने वाले हैं। हमारे सब कर्तव्य कर्मों का वेद द्वारा प्रभु ने प्रतिपादन किया है। ये प्रभु ही ऋत्विजम्=समय-समय पर प्रत्येक ऋतु में पूजा के योग्य हैं। प्रभु के पूजन से प्रभु की शक्ति का हमारे में प्रवाह होता है। हम स्वास्थ्य-प्राप्ति के लिए ज्ञानपूर्वक कर्मों को करें। फिर जीविकोपार्जन के कर्मों में प्रवृत्त हों। बाकी समय स्वाध्याय में लगायें। स्वाध्याय-श्रान्त होने पर प्रभु के नाम का जप करें। यह हमें फिर से तरोताजा कर देगा। दिन में दुनिया के कर्मों से अवकाश न मिले तो रात्रि के समय प्रभु के नाम का जप करते हुए निद्रा की गोद में जायें। इससे सारी रात्रि प्रभु के साथ सम्पर्क बना रहेगा। स्वप्न में प्रभु का आभास भी मिलेगा। इसे हम जागरित होने पर भी न भूलने का प्रयत्न करें। यही बात योग-दर्शन में 'स्वप्नज्ञानालम्बनं वा' इस सूत्र से कही गई है।

होतारम्=वे प्रभु सब-कुछ देने वाले हैं (हुदाने) तथा प्रलय के समय सारे ब्रह्माण्ड को अपने अन्दर ले लेने वाले हैं। प्रभु ने इस सृष्टि में हमारे हित के लिए सब आवश्यक पदार्थ हमें प्राप्त कराये हैं। रत्नधातमम्—रमणीय धनों के प्राप्त कराने वालों में वे प्रभु सर्वोत्तम हैं। प्रभु ने शरीरों में इस प्रकार व्यवस्था की है

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कि खाये हुए आहार से 'रस-रुधिर-मांस-मेदस्-अस्थि-मज्जा-शुक्र' इन सात धातुओं का निर्माण होता है। ये सात धातुएँ ही सात रत्न हैं। इनके कारण ही शरीर रमणीय बना है सो ये ही रत्न हैं। प्रभु ने प्रत्येक शरीरगृह में इन सात रत्नों की स्थापना की है 'दमे-दमे सप्तरत्ना दधानम्' इस 'रत्नधातमम्' प्रभु का हम पूजन करें।

भावार्थ—मैं 'अग्नि पुरोहित-यज्ञ के देव ऋत्विज् होता व रत्नधातम' प्रभु का पूजन करता हूँ।

पूर्व व नूतन ऋषियों से 'ईड्य, प्रभु

अग्निः पूर्वेभिऋषिभिरीड्यो नूतनैरुत।
स देवां एह वक्षति॥ (१।१।२)

अग्निः=सारे ब्रह्माण्ड को गति देने वाले व सब जीवों को प्रगति-पथ पर प्रेरित करने वाले प्रभु, ऋषिभिः=तत्त्वदर्शियों से, ईड्यः=पूजा के योग्य हैं, अर्थात् प्रभु का पूजन वस्तुतः ये तत्त्वद्रष्टा ऋषि ही करते हैं। वे तत्त्वद्रष्टा जो कि पूर्वेभिः (पृ पालनपूरणयोः)=अपना पालन करते हैं, अपने को रोगों से आक्रान्त नहीं होने देते तथा अपनी न्यूनताओं को दूर करके अपने पूरण का प्रयत्न करते हैं। उत=और नूतनैः=नु (To praise, to go) जो सदा प्रशंसात्मक शब्द ही बोलते हैं, जो कभी निन्दा नहीं करते तथा सदा गतिशील हैं—जिनका जीवन क्रियामय है। संक्षेप में भाव यह है कि प्रभु का स्तवन वे करते हैं जो कि (क) तत्त्वद्रष्टा बनते हैं, (ख) अपने शरीरों को रोगों का शिकार नहीं होने देते, (ग) अपनी न्यूनताओं को दूर करने का प्रयत्न करते हैं, (घ) जो कभी कटु व निन्दात्मक शब्दों को नहीं बोलते, तथा (ङ) क्रियामय जीवन बिताते हैं।

सः=वे प्रभु ही इस प्रकार उपासित होने पर इह=इस मानव-जीवन में हमें, देवान्=दिव्य गुणों को, आ वक्षति=प्राप्त कराते हैं। अर्थात्, प्रभु-उपासना का लाभ यह होता है कि हमारे में दिव्य गुणों की वृद्धि होती है।

भावार्थ—प्रभु का सच्चा उपासक वह है जो कि ज्ञान प्राप्त करता है (ऋषि), शरीर में नीरोग, मन में निर्मल होता है, सदा शुभ शब्दों को बोलता है और क्रियाशील होता है। इस प्रकार प्रभु के उपासन से हमारे में उत्तरोत्तर दिव्य गुणों की वृद्धि होती है।

प्रशस्त धन

अग्निना रयिमश्नवत् पोषमेव दिवे दिवे।
यशसं वीरवत्तमम्॥ (१।१।३)

पूर्व-मन्त्र में ऋषियों द्वारा अग्नि-स्तवन का उल्लेख हुआ है। उस प्रभु की उपासना से मनुष्य सांसारिक दृष्टि से असफल हो जाता हो, ऐसी बात नहीं है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विष्णु की उपासना करेंगे तो लक्ष्मी के दर्शन तो होंगे हो। विष्णु के साथ लक्ष्मी का निवास तो है ही। सो मन्त्र में कहते हैं कि अग्निना=उस अग्रणी प्रभु से (रयिम्) धन को (अश्नवत्) प्राप्त करता है। परन्तु उस धन को नहीं जो कि उसकी अवनति का कारण बन जाये, अपितु प्रभु का स्मरण करते हुए जो धन प्राप्त होता है उसकी यह विशेषता है कि दिवे-दिवे=दिन-ब-दिन, पोषम् एव= वह हमारे पोषण का ही कारण बनता है। इससे हमारा किसी प्रकार का ह्रास नहीं होता। प्रभु-स्मरणपूर्वक अर्जित धन मुझे विषय-वासनाओं में प्रवृत्त करके निधन की ओर नहीं ले जाता। यह मेरे उत्कर्ष के लिए साधन बनकर मुझे धन्य जीवन वाला बनाता है।

इस धन को प्राप्त करके मैं यशसं=यश वाला बनता हूँ। धन के मद में मैं ऐसे कार्य नहीं कर बैठता जो कि मेरे अपयश का कारण बन जायें। यज्ञ आदि उत्तम कर्मों में धन का विनियोग करके मैं यशस्वी जीवन को प्राप्त करता हूँ। इसके साथ ही यह धन हमें, वीरवत्तमम्=अतिशयेन शक्ति-सम्पन्न बनाने वाला होता है। सामान्यतः धनी मनुष्य नौकरों से कार्य कराता हुआ स्वयं आराम का जीवन बिताने लगता है और परिणामतः निर्बल हो जाता है। क्रिया ही तो शक्ति को जन्म देती है और क्रिया का अभाव शक्ति-क्षय का हेतु होता है। बायें हाथ की निर्बलता का कारण यही है कि यह दायें हाथ की तुलना में कम कार्य करता है। प्रभु-स्मरण के साथ होने वाला धन हमें क्रियाशील बनाये रखकर सबल व वीर बनाता है।

भावार्थ—प्रभु उपासक के लिए उस धन को देते हैं जो कि उपासक का दिन-प्रतिदिन पोषण करने वाला होता है। यह धन उसे उत्तम कर्मों में सहायक बनकर यशस्वी जीवन वाला बनाता है, और इस धन के होने पर उपासक स्वयं क्रिया-शील बना रहता है और परिणामतः निर्बल न होकर वीरता से सम्पन्न होता है।

'यज्ञों के कर्ता व रक्षक' प्रभु

अग्ने यं यज्ञमध्वरं विश्वतः परिभूरसि।
स इद् देवेषु गच्छति॥ (१-१-४)

गत मन्त्र के अनुसार प्रभु का स्तोता प्रभु से धन को प्राप्त करके उस धन को यज्ञ आदि उत्तम कर्मों में विनियुक्त करता हुआ यशस्वी जीवन वाला बनता है। परन्तु 'कहीं यह यश उसके मस्तिष्क में अहंकार को न उत्पन्न कर दे', इसलिए वह प्रभु का स्मरण करता हुआ कहता है कि अग्ने=ऐ सारे कार्यों के संचालक प्रभो! यं=जिस, अध्वरं=हिंसा से शून्य, यज्ञं=श्रेष्ठतम कर्म को आप, विश्वतः= सब ओर से, परिभूः (To take care of, to govern)=रक्षित करने वाले

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

व व्यवस्थित करने वाले हो, सः=वही यज्ञ, इत्=निश्चय से, देवेषु=देवताओं में, गच्छति=प्राप्त होता है, अर्थात् सब यज्ञ वस्तुतः आपके ही द्वारा होते हैं। देववृत्ति के पुरुष तो उन यज्ञों के माध्यम मात्र बनते हैं—'निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन्।'

तथ्य यही है कि संसार में सारे उत्तम कर्म उस प्रभु द्वारा ही सम्पन्न होते हैं, जीव माध्यम मात्र है। अज्ञानवश जीव को उन कर्मों का गर्व हो जाता है—'अज्ञानेनावृतं ज्ञानं तेन मुह्यन्ति जन्तवः।' यह गर्व उन कर्मों की उत्तमता को समाप्त कर देता है। 'दानं दमश्च यज्ञश्च'—इन गीता के शब्दों में यज्ञ दैवी सम्पत्ति में परिगणित हुआ है—देव यज्ञशील होते हैं। परन्तु यही यज्ञ अभिमानयुक्त होकर किया जाने पर 'आसुर' हो जाता है। असुर उन यज्ञों का गर्व करते हैं और कहते हैं कि 'यज्ञे दास्यामि मोदिष्ये इत्यज्ञानविमोहिताः'—यज्ञ करूँगा, दान दूँगा, तब यश मिलने पर कितना आनन्द होगा! इस प्रकार ये असुर कर्तृत्व के अहंकार से मूढ़ बने रहते हैं। 'यजन्ते नामयज्ञैस्ते दम्भेनाविधिपूर्वकम्'—ये असुर केवल नाम के लिए दम्भपूर्वक इन यज्ञों को करते हैं। इसके विपरीत देव यज्ञ करते हैं और उसे प्रभु के अर्पण कर देते हैं—'ब्रह्मण्याधाय कर्माणि संगं त्यक्त्वा करोति यः।' इस प्रकार निर्मम व निरहंकार होकर ही वे प्रभु को प्राप्त करते हैं और परम शान्ति के जीवन वाले होते हैं।

भावार्थ—हमारा जीवन यज्ञमय हो। उन सब यज्ञों को प्रभु से होता हुआ हम जानें। उत्तम कर्म करें, पर उनका हमें गर्व न हो—यही देव बनकर महादेव को प्राप्त करने का मार्ग है।

देव का देवों के साथ आगमन

अग्निर्होता कविक्रतुः सत्यश्चित्रश्रवस्तमः।
देवो देवेभिरागमत्॥ (१।१।५)

गत मन्त्र की भावना को पुष्ट करते हुए कहते हैं कि अग्निः=वे सबको गति देने वाले प्रभु ही, होता=सब यज्ञों के करने वाले हैं। प्रभुकृपा से ही हम प्रभु से किये जाने वाले यज्ञों के माध्यम बनते हैं, और उन यज्ञों को पूर्ण होता हुआ देखते हैं; सर्वमहान् सृष्टियज्ञ के होता तो वे प्रभु स्पष्ट ही हैं। कविक्रतुः=क्रान्तदर्शी होते हुए वे सब कर्मों के कर्ता हैं। इस क्रान्तदर्शित्व के कारण ही उनके सृष्टि आदि कर्मों में अपूर्णता नहीं है 'पूर्णमदः पूर्णमिदम्' प्रभु पूर्ण हैं, सो यह सृष्टियज्ञ भी पूर्ण है। हमें अज्ञानवश कई बार इस सृष्टि में कई न्यूनतायें प्रतीत होने लगती हैं। भूकम्प आदि का आना बड़ा घातक लगता है। शरीर में कई ग्रन्थियाँ (Glands) निष्प्रयोजन प्रतीत होती हैं। कितने ही पदार्थों का प्रयोजन हमें अज्ञात है। पर ये सब बातें हमारे अज्ञान के कारण ही हैं। जितना-जितना हमारा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ज्ञान बढ़ता जायेगा, उतना-उतना हमें संसार पूर्ण प्रतीत होता है।

सत्यः=वे प्रभु पूर्ण सत्य हैं—सत्यस्वरूप हैं। अथवा 'सत्सु भवः'=सज्जनों में उनका निवास है। सर्वव्यापकता के नाते सर्वत्र होते हुए भी वे सज्जन-हृदयों में ही प्रकाशित होते हैं।

चित्रश्रवस्तमः=(चित्) वे प्रभु सृष्टि के प्रारम्भ में सर्वश्रेष्ठ वेदज्ञान के देने वाले हैं। ज्ञान देने का उनका प्रकार भी अद्भुत है। हृदयस्थ होते हुए वे बिना किसी प्रयास के पवित्र हृदयों में उसका प्रकाश कर देते हैं। स्वयं वे प्रभु सर्वाधिक ज्ञान वाले हैं। (श्रवस्=ज्ञान) निरतिशय ज्ञान के अधिष्ठान ही तो ब्रह्म हैं।

देवः=ये सब दिव्य गुणों के पुञ्ज ज्योतिर्मय प्रभु देवेभिः=देवों के साथ आगमत्=आते हैं। हृदय में प्रभु का वास होने पर सब दिव्य गुण हमारे में स्वतः प्रादुर्भूत हो जाते हैं। अथवा दिव्य गुणों के द्वारा वे प्रभु हमारे में आते हैं। प्रभु-प्राप्ति का मार्ग यही है कि हम अपने आचरण को देव-सदृश बनायें। हमारे व्यवहार असुरों जैसे न हों। जितना-जितना हम दिव्यता को अपनायेंगे उतना-उतना प्रभु के समीप होते जायेंगे।

भावार्थ—वे प्रभु 'अग्नि, होता, कविक्रतु, सत्य व चित्रश्रवस्तम' हैं। ये दिव्य गुणों के पुञ्ज प्रभु दिव्यगुणों के धारण से ही प्राप्त होते हैं। अथवा जितना-जितना हम प्रभु को धारण करने का प्रयत्न करते हैं, उतना-उतना हम दिव्य गुणों वाले बनते जाते हैं।

दाश्वान् का कल्याण

यदङ्ग दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि।
तवेत्तत् सत्यमङ्गिरः॥ (१।१।६)

अंग=सम्पूर्ण वस्तुओं को प्राप्त कराने वाले! (अगि गतौ, गति, प्राप्ति) अग्ने=उन्नति-पथ पर ले चलने वाले प्रभो! आप यत्=जो यह व्रत धारण करते हैं कि दाशुषे=दाश्वान् के लिए, देने वाले के लिए—आपके प्रति अपना अर्पण करने वाले के लिए—धन का त्याग करके आपमें पूर्ण विश्वास रखने वाले के लिए—त्वम्=आप भद्रं=भद्र को करिष्यसि=करेंगे। तव=आपका, तत्=वह व्रत, इत्=निश्चय से सत्यम्=सत्य है।

तद्वै भद्रं पुरुषस्य वित्तं तद् भद्रं गृहा भद्रं प्रजा भद्रं पशवो भद्रम्' इस ब्राह्मण-ग्रन्थ के वाक्य के अनुसार भद्र का भाव है—'जीवन के लिए आवश्यक धन, घर, उत्तम सन्तान तथा गौ आदि पशु।' दाश्वान् के लिए प्रभु इन सब चीजों को प्राप्त कराते हैं। इन चीजों के होने पर अकल्याण का प्रश्न ही नहीं रहा। यही अभ्युदय है। इस प्रकार प्रभु अपने इस व्रत द्वारा दाश्वान् के लिए इन वस्तुओं को प्राप्त कराते हुए उसके अंग-प्रत्यंग में इसका संचार करते हैं। इस जीवनी शक्ति को

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

देते हुए, ऐ प्रभो ! आप सचमुच 'अङ्गिरः' (अङ्गिरस) अंगों में रस को संचरित करते हैं—जीवन को समृद्ध करते हैं।

एक बालक माता-पिता के प्रति अपना अर्पण कर देता है—अपनी इच्छा को उनकी इच्छा में मिला देता है, तो माता-पिता उसका अधिक ध्यान करते हैं, उत्तम निर्माण के लिए यत्नशील होते हैं, इसी प्रकार जब एक दाश्वान् पुरुष प्रभु के प्रति अपने को अर्पित कर देता है तो प्रभु का वह अधिक प्रिय होता है। प्रभु उसके लिए सब आभ्युदयिक वस्तुएँ प्राप्त कराते हैं। जीव से धारण किया गया कोई व्रत उसकी अल्पज्ञता व अल्पशक्ति के कारण टूट भी जाये, परन्तु उस सर्वज्ञ व सर्वशक्तिमान् प्रभु का व्रत कभी टूटता नहीं। माता-पिता अल्पज्ञतावश सन्तान को कभी कोई गलत वस्तु भी दे बैठते हैं, परन्तु वे सर्वज्ञ प्रभु भद्र वस्तुओं को प्राप्त कराके अपने सन्तानों का भद्र ही करते हैं।

भावार्थ—प्रभु अपने प्रति अर्पण करने वाले का अवश्य कल्याण करते हैं। उपासक को वे आवश्यक धन, गृह, उत्तम सन्तान व उत्तम गौ आदि पशु प्राप्त कराते ही हैं। प्रभु का यह व्रत सत्य है।

प्रभु के समीप

उप त्वाग्ने दिवे-दिवे दोषावस्तर्धिया वयम्।
नमो भरन्त एमसि॥ (१।१।७)

गत मन्त्र में वर्णित समर्पण को ही स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि ऐ अग्ने=हमारे लिए सब आवश्यक पदार्थों को प्राप्त कराने वाले प्रभो ! वयं=हम दिवे-दिवे=प्रतिदिन, दोषावस्तः=रात्रि और दिन अर्थात् प्रातः-सायं सन्धिवेला में वयं=हम धिया=बुद्धिपूर्वक कर्मों के द्वारा आपके प्रति नमः भरन्तः=पूजा को प्राप्त कराते हुए (स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः) त्वा उप=आपके समीप एमसि=सर्वथा प्राप्त होते हैं।

प्रतिदिन प्रातः-सायं प्रभु-चरणों में उपस्थित होना मानव-जीवन के लिए इसलिए आवश्यक है कि इससे (क) पवित्रता की भावना बनी रहती है, (ख) हमारे जीवन में प्रभु की शक्ति का प्रवाह होता है, (ग) जीवन का उद्देश्य धन ही धन नहीं रह जाता और परिणामतः पारस्परिक प्रेम विनष्ट नहीं हो जाता। वस्तुतः शरीर के लिए जैसे 'भोजन आवश्यक है, और मस्तिष्क के लिए 'स्वाध्याय' जरूरी है, उसी प्रकार हृदय के लिए इस प्रातः-सायं प्रभु के 'ध्यान' की आवश्यकता है। भोजन के बिना शरीर निर्बल होकर रोगाक्रान्त हो जाता है। स्वाध्याय के बिना मस्तिष्क दुर्बल होकर ठीक विचार नहीं कर पाता। इसी प्रकार उपासना के बिना हृदय मलिन होकर वासनाओं से अभिभूत हो जाता है। भोजन शरीर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

को सबल बनाता है। स्वाध्याय मस्तिष्क को सम्पुष्ट करता है। इसी प्रकार हृदय को बलवान् बनाने के लिए उपासना की आवश्यकता है।

भावार्थ—हम प्रतिदिन प्रातः-सायं प्रभु का उपासन करने वाले बनें। दिन-भर प्रज्ञापूर्वक कर्मों को करते हुए उन कर्मों को हम प्रभु-चरणों में अर्पित करें। प्रातः शक्ति की याचना करें कि हम बुद्धिपूर्वक पवित्र व सशक्त कर्मों को कर पायें तथा सायं उन कर्मों को प्रभु के प्रति अर्पित करते हुए निरहंकार बनें।

प्रभु-दर्शन

राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिविम्।
वर्धमानं स्वे दमे॥ (१।१।८)

गत मन्त्र के अनुसार प्रतिदिन प्रातः-सायं प्रभु के समीप उपस्थित होने से हम प्रभु-दर्शन के योग्य बनेंगे और देखेंगे कि वे प्रभु राजन्तम्=देदीप्यमान हैं—अदित्यवर्ण हैं—हजारों सूर्यों की दीप्ति के समान उनकी दीप्ति है। तथा (राज to regulate) वे प्रभु ही सारे संसार को व्यवस्थित कर रहे हैं। उस प्रभु के प्रशासन में ही ये सब ग्रह-नक्षत्र व नदियाँ आदि गति कर रही हैं। वे प्रभु ही अध्वराणां गोपाम्=सब हिंसा-रहित यज्ञों के रक्षक हैं। प्रभु की कृपा से ही सब उत्तम कार्य पूर्ण हुआ करते हैं। 'जयोऽस्मि व्यवसायोऽस्मि सत्त्वं सत्त्ववतामहम्'—सब विजय उस प्रभु के अनुग्रह का ही परिणाम है। ऋतस्य दीदिविम्=वे प्रभु सत्य के प्रकाशक हैं। वेद के ज्ञान द्वारा प्रभु ने सब सत्य विद्याओं का प्रकाश किया है। हमारे सब कर्तव्यों का प्रतिपादन भी प्रभु ने इस वेद द्वारा किया है—हमारे लिए सत्यमार्ग का दर्शन इस वेद में उपलभ्य है।

वे प्रभु स्वे दमे=अपने स्थान में अथवा अपने पूर्ण दान्त रूप में (दमन में) वर्धमानम्=सदा से बढ़े हुए हैं। वस्तुतः वृद्धि दमन के अनुपात में होती है—जितना दमन उतनी वृद्धि। आदमी तो आदमी बनता ही दमन से है=आ समन्तात्-दमी=दमन करने वाला। हम इन इन्द्रियों को वश में करते हैं, मन का दमन करते हैं और वृद्धि को प्राप्त करते हैं। प्रभु में दमन की पराकाष्ठा है—सो वृद्धि की भी वहाँ असीमता है। निरतिशय वृद्धि से युक्त हैं वे प्रभु। प्रभु को इस रूप में देख-कर स्तोता को भी ध्यान आता है कि वह (क) ज्ञान से देदीप्यमान बनने का प्रयत्न करे। (ख) अपने जीवन को नियमित बनाये। (ग) इसका जीवन सदा यज्ञ-मय हो। (घ) सत्य के प्रकाश को देखने के लिए वह यत्नशील हो। (ङ) तथा मन व इन्द्रियों के दमन से वह शक्तियों की वृद्धि करने वाला हो।

भावार्थ—प्रभु 'देदीप्यमान यज्ञों के रक्षक—सत्य के प्रकाशक व सदा से बढ़े हुए हैं।' हम भी अपने जीवनों को ऐसा बनाने का प्रयत्न करें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रभु हमारे पिता

स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव ।
सचस्वा नः स्वस्तये ।। (१।१।९)

गत मन्त्र के अनुसार स्तोता प्रभुदर्शन करता हुआ कहता है कि ऐ अग्ने= हमारी अग्रगति व उन्नति के साधक प्रभो ! सः=वे आप नः=हमें सूनवे पिता इव=पुत्र के लिए पिता की तरह सूपायनः=(सु उप अयनः) सुगमता से समीप प्राप्त होने वाले भवः=होइये। पुत्र को पिता से भय नहीं लगता—वहाँ वह प्रेम को अनुभव करता है और निःशङ्क होकर पिता की गोद में पहुँचने की चेष्टा करता है। इसी प्रकार हम भी आपकी गोद में आ सकें (सु+उपायन)। पिता पुत्र के लिए उत्तमोत्तम उपहार प्राप्त कराता है। प्रभु भी हमारे लिए जीवन में उन्नति के लिए साधनभूत वस्तुओं को प्राप्त कराते हैं। हमें भी चाहिए कि उन वस्तुओं का ठीक प्रयोग करते हुए हम उन्नतिपथ पर आगे बढ़ें।

ऐ प्रभो ! सब आवश्यक वस्तुएँ प्राप्त कराके नः=हमें स्वस्तये=कल्याण के लिए—उत्तम स्थिति के लिए (सु अस्ति) सचस्व=संगत करिये। आपसे दी हुई चीजों का ठीक प्रयोग करके हम उन्नत होते चलें। अथवा आप हमें प्राप्त होइए ताकि हमारी उन्नत स्थिति बनी रहे। आपसे दूर होते ही हम मार्गभ्रष्ट हो जाते हैं। आपका स्मरण हमारी जीवन की गाड़ी को पथभ्रष्ट नहीं होने देता। जैसे पिता की दृष्टि में रहने वाले बालक का आचरण ठीक बना रहता है, उसी प्रकार प्रभु के सामीप्य में हमारा जीवन उत्तम मार्ग में ही स्थित रहता है।

भावार्थ—प्रभु हमारे लिए उसी प्रकार सुगमता से प्राप्त होने योग्य हों, जैसे पिता पुत्र के लिए। प्रभु के साथ हमारा मेल हो ताकि हमारी जीवन-स्थिति उत्तम बनी रहे।

सम्पूर्ण सूक्त का निचोड़ यही है कि हम प्रभु की उपासना करें—प्रभु हमें कल्याण के लिए संगत करें। □

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शठे शाठ्यं समाचरेत्

—श्री अशोक कौशिक

विश्वभर में आज हिन्दुओं पर आक्रमण हो रहे हैं। चारों ओर त्राहि-त्राहि का स्वर गूंज रहा है। इतना होने पर भी भारत का हिन्दू या तो प्रगाढ़ निद्रा में सोया हुआ है या फिर अपने स्वार्थ में इतना रत है कि उसको अपने पड़ोस तक की सुध नहीं है। आगे की पंक्तियों में हम कुछ इस प्रकार की घटनाओं का उल्लेख कर रहे हैं जो रोंगटे खड़े कर देनेवाली हैं।

पाकिस्तान स्थित जैकबाबाद और सक्खर में २ मार्च १९८६ के दिन पाकिस्तानी नर-पिशाचों ने हिन्दुओं पर जो अत्याचार किये उसकी करुणकथा 'खालसा सिख फेडरेशन एसोसिएशन' की ओर से प्रसारित अपील में दी गई है, जिसका सार संक्षेप में निम्न प्रकार है—

"२ मार्च १९८६ को प्रातःकाल साढ़े आठ बजे से एक बजे तक राक्षसी माया का जो ताण्डव-नृत्य उन पाकिस्तानी नर-पिशाचों ने किया उसमें उन्होंने जैकबाबाद के २१ मन्दिरों और गुरुद्वारों को भूमिसात् करके सारी सम्पत्ति या तो लूट ली या भस्मसात् कर दी। हिन्दुओं की पाठशालाएँ, विद्यालय और गौशालाएँ, यहाँ तक कि श्मशान भूमि को भी भस्मसात् कर दिया। इन स्थानों पर विद्यमान पुस्तकालय नष्ट कर दिए। हजारों-लाखों पुस्तकें, धर्मग्रन्थ, पाण्डुलिपियाँ तथा देवी-देवताओं के चित्र राख के ढेर में बदल दिए। इसी प्रकार सक्खर में १४ मन्दिरों तथा गुरुद्वारों को भस्मसात् कर दिया गया। पाठशालाएँ, गौशालाएँ, श्मशानघाट नष्ट कर दिए तथा सारी सम्पत्ति लूट ली या जला दी।"

उन्हीं दिनों कश्मीर के जिला अनन्तनाग में जिस प्रकार हिन्दुओं का संहार किया गया, उनके घर लूटे गए, महिलाओं का अनादर किया गया और धर्मस्थलों को जलाया गया उससे घाटी के कश्मीरी पण्डितों में ऐसा हाहाकार मचा कि वे सब-के-सब सामूहिक रूप से कश्मीर छोड़कर जाने की तैयारी करने लगे। तत्कालीन गुल शाह की सरकार ने इन अत्याचारों को रोकने की तनिक भी चेष्टा नहीं की। न केवल इतना, अपितु प्रच्छन्न रूप से आतंककारियों को प्रोत्साहित किया गया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कश्मीर को हड़पने के लिए पाकिस्तान अपनी ओर से सब प्रकार के अस्त्र-शस्त्र प्रयोग में ला चुका है। सन् १९४८ और १९६५ के युद्धों में भी उसका लक्ष्य कश्मीर को हथियाना ही रहा है। इन सबमें विफलता मिलने पर इस बार उसने कश्मीर के भीतर ही विद्यमान पाकिस्तान-समर्थक तत्त्वों के माध्यम से सारी घाटी को हिन्दूविहीन करने के लिए यह कत्लेआम करवाया। कश्मीरी पण्डितों के प्रतिनिधि प्रधानमन्त्री और राष्ट्रपति से आकर मिले और उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि ऐसी हालत में हम कश्मीर में नहीं रह सकते।

यह कहा जाता है कि इन आक्रमणों की पृष्ठभूमि में राम-जन्मभूमि-मुक्ति का मामला है। मुसलमान हठ किए बैठे हैं कि वह स्थान बाबरी मस्जिद का है, राम-जन्मभूमि-स्थल नहीं। इस सम्बन्ध में पुरातत्त्व से सम्बन्धित तथ्य तथा इतिहास के पन्नों का उल्लेख हम विगत अंक में कर चुके हैं। वास्तव में इन आक्रमणों का उद्देश्य हिन्दुओं के मनों में आतंक उत्पन्न करना है, जिससे कि वे सिन्ध और कश्मीर से पलायन कर जाएँ।

पाकिस्तान के सरकारी और गैर-सरकारी प्रचार-माध्यमों ने भी अयोध्या में श्री रामजन्मभूमि से सम्बन्धित न्यायालय के निर्णय का झूठा प्रचार करने में एक शरारतपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने प्रचार किया कि इस खुशी में हिन्दुओं ने पुलिस और फौज की सहायता से अनन्तनाग, श्रीनगर, सपुर और अन्य स्थानों पर असंख्य मुसलमानों को मार-काट डाला, उनकी सम्पत्ति लूट ली और मस्जिदों को जला दिया। इस झूठे प्रचार से सिन्ध के मुसलमानों के मनों में विष का बीज उग आया और उसकी प्रतिक्रिया जैकबाबाद और सक्खर के अत्याचार के रूप में हुई। कश्मीर घाटी में जहाँ कश्मीरी पण्डितों की संख्या नगण्य है, क्या वहाँ उनके लिए यह सम्भव है कि वे विशाल संख्या में रहने वाले मुसलमानों की सम्पत्ति लूट सकें और उनकी मस्जिदों को जला दें? यह सब पाकिस्तानी झूठ का उदाहरण था, जबकि स्थिति इसके सर्वथा विपरीत थी, जिसका वर्णन हम ऊपर कर आए हैं। कश्मीर में की गई हिन्दुओं की हानि के आँकड़े निम्नोद्धृत हैं—

सम्पूर्ण जलाए गए मन्दिर—२०, आंशिक जलाए गए मन्दिर—३८, जलाए गए घर—१५, लूटे गए घर—७६४ तथा लूटी गई दूकानें—२३।

इस प्रकार इन दोनों स्थानों पर हिन्दुओं पर जो बर्बर अत्याचार हुए हैं उसका उदाहरण संसार में अन्यत्र देखने को नहीं मिलेगा। जितने सुनियोजित ढंग से एक साथ सारे प्रदेश में तथा उसके साथ ही पाकिस्तान में भी ये आक्रमण हुए हैं उससे यह स्पष्ट होता है कि ये किसी सुदीर्घ योजना के अंग थे। इन आक्रमणों की विशेषता यह थी कि इनमें हिन्दुओं को मारा-काटा नहीं गया, अपितु उनके मन्दिरों और घरों को लूटा गया अथवा जलाया गया, पाकिस्तान में विद्यालयों और गौशालाओं तथा श्मशान घाट तक को नष्ट किया गया, जिससे कि हिन्दू

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
त्रस्त होकर उन क्षेत्रों को छोड़कर भाग जाएँ और वहाँ मुसलमानों का एकछत्र राज्य हो जाय।

कश्मीर घाटी में बिहार और तिब्बत के अतिरिक्त पाकिस्तान और बंगलादेश के मुसलमानों को स्थायी रूप से बसाया जा रहा है और उन्हें स्थायी निवास के प्रमाणपत्र भी दे दिए गए हैं, जबकि आरम्भ से ही वहाँ रहने वाले हिन्दुओं को अभी तक भी वे प्रमाणपत्र प्राप्त नहीं हैं। वहाँ निरन्तर भारत-विरोधी प्रचार होता है। दिखावे के लिए कथित असामाजिक तत्त्वों को पकड़ा तो गया था, किन्तु कानूनी कमी के कारण उन्हें तुरन्त छोड़ भी दिया गया और अब वे खुलेआम कश्मीर घाटी में घूम रहे हैं। कश्मीर के भारत-विलय के समय वहाँ हिन्दुओं की संख्या दो लाख थी, पर अब अत्याचारों के परिणामस्वरूप ६०-६५ हजार ही रह गई है। यही स्थिति पाकिस्तान के हिन्दुओं की भी है। उनको तो अब अँगुलियों पर ही गिना जा सकता है।

कश्मीर की समस्या का एकमात्र हल है वहाँ की धारा ३७० को समाप्त करना। जब तक यह धारा निरस्त नहीं की जाती तब तक वहाँ हिन्दुओं पर अत्याचार होते रहेंगे, मुसलमान अधिकाधिक संख्या में बसाये ही जाते रहेंगे और अशान्ति बनी ही रहेगी। हिन्दुओं के प्राण, आदर-सम्मान और धन-सम्पत्ति सब खतरे में पड़ी ही रहेगी।

इसी प्रकार पाकिस्तान की समस्या का एकमात्र हल यही है कि वहाँ के हिन्दुओं का भारत में स्थानान्तरण किया जाए। उनकी सारी चल सम्पत्ति उन्हें लाने दी जाए और जो सम्पत्ति छीन ली गई है उसको वापस लौटाया जाए तथा अचल सम्पत्ति का उन्हें भरपूर मुआवजा दिया जाए, अन्यथा जो अँगुलियों में गिने जाने योग्य हिन्दू वहाँ बचे हैं कुछ दिन बाद उनका चिह्न भी वहाँ नहीं बचेगा। तब शायद भारत सरकार से कोई यह शिकायत भी नहीं करेगा कि वहाँ हिन्दुओं पर अत्याचार हो रहा है। कहीं भारत सरकार इसी दिन की प्रतीक्षा तो नहीं कर रही ? गांधीवादी सैक्युलरिज्म से और अपेक्षा भी क्या की जा सकती है !

यह समस्या केवल कश्मीर, सिन्ध अथवा बंगलादेश की नहीं है अपितु स्वयं हिन्दुओं के देश भारत में भी हिन्दुओं के साथ ऐसा ही दुर्व्यवहार किया जा रहा है। किन्तु फिर भी यहाँ का हिन्दू चिर निद्रा में लीन है। यदि अब भी उसकी चेतना जागृत नहीं हुई तो फिर कब होगी ? यही हमारी चिन्ता का विषय है। मुस्लिम मतान्धता, क्रिश्चियन कुटिलता और अब सिख सम्प्रदायवाद जिसका दूसरा नाम आतंक है, हिन्दू की जड़ों में तेल और मठा डाल रहे हैं।

व्रजन्ति ते मूढ़धियः पराभवं,
भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः।

जो दुष्टों के साथ दुष्टता का व्यवहार नहीं करते, वे मूर्ख पराभव को प्राप्त होते हैं। □

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सत्संग का महत्त्व

—श्री आनन्दवेशजी

मानव-जीवन के निर्माण के लिए जितने साधनों का अनुष्ठान करना होता है उनमें सबसे बड़ा साधन सत्संग है। आज तक संसार में जितने महापुरुष बने हैं वे सब सत्संग की कृपा के मधुर फल हैं। पतित आदमी को देवता बना देना, भटके हुए राही को सुपथ पर लगा देना, गुणहीन को गुणों का भंडार बना देना, संतप्त को आह्लादित कर देना, रोते हुए को हँसा देना, अशान्त को शान्त बना देना, कीर्तिरहित की चारों दिशाओं में कीर्ति फैला देना, जड़बुद्धि की जड़ता को हर लेना, मूर्ख को विद्वान् बना देना, लाखों की सभा को मन्त्र-मुग्ध कर देने वाला वक्ता बना देना और संसार के बन्धन में फँसे हुए को मुक्ति के परम पद को प्राप्त करा देना सत्संग का ही कार्य है। जिसे एक बार भी जीवन में सत्संग का सुअवसर प्राप्त हो गया उसका कुछ-का-कुछ बन गया। पाँच मिनट का सत्संग भी मनुष्य के जीवन का कायाकल्प कर देता है, जीवन में महान् परिवर्तन कर देता है। जिसने इसके रस का आस्वादन कर लिया, वह जीवन-भर इसकी महिमा का बखान करता-करता नहीं थकता। सचमुच इसकी माया निराली है। जी चाहता है कि इसकी प्रशंसा का गुणगान करता चला जाऊँ और लेखनी यह चाह रही है कि सारा दिन ही नहीं सारी आयु इसकी गरिमा का उल्लेख करती चली जाऊँ, परन्तु इतना होने पर मुझे यह विश्वास नहीं होता कि जीवन-भर इसका गुणानुवाद करने के पश्चात् भी इसके समस्त गुणों का वर्णन कर सकूंगा या नहीं। मुझे तो ऐसा लगता है कि एक जीवन में तो क्या, यदि कोई हजारों जीवन भी धारण करे और आये जीवन में इसका स्तवन करता चला जाये, तब भी सत्संग के गुणों की कहानी पूरी न हो सकेगी। कोई अकेला ही नहीं अपितु हजारों विद्वान् पृथिवीतल के वनों को लेखनी बना लें, समुद्र को स्याही बना लें और धरती को कागज बना लें, तब भी हजारों जीवन बीत जाने के बाद भी सत्संग की गुणावली को नहीं लिखा जा सकेगा। किसी ने कहा भी है—

सब धरती कागद करूँ, लेखनी सब वनराय।
सात समुद्र की मसि करूँ, सत्संगगुण लिखा न जाय॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अनोखा दीप

सत्संग के गुण अपार हैं, इसकी छवि अद्भुत है, इसका दर्शन मन-मोहक है, इसके राग अलापने वालों ने मुक्त कण्ठ से जीवन-भर इसका राग अलापा है, लेखक ग्रन्थ पर ग्रन्थ लिख रहे हैं, इसके महत्त्व से वेदशास्त्र भरे पड़े हैं, सन्तों ने आयु-भर इसके गुणकीर्त्तन में अपनी मधुर वीणा बजाई है। करोड़ों पतितों ने जीवन सँभाला है। जो एक बार भी सत्संग में आ गया वह इसकी कीमत जान गया, फिर वह सत्संग का ही हो गया। सत्संग ऐसा प्रकाश है जो लाखों जन्म-जन्मान्तर के हृदय में स्थिर पापमय अन्धकार को नष्ट कर देता है। जैसे एक भवन में लाखों वर्ष का गहन तिमिर जमा है, परन्तु उस भवन में यदि कोई दीपक ले जाये तो क्या होता है ? वह सारा अन्धेरा जो लाखों वर्ष से वहाँ पैर जमाये हुए था, एक मिनट में ही अपना बिस्तर-बोरिया गोल करता है और वहाँ से कूच कर जाता है। इसी प्रकार से जब तक मनुष्य के हृदय-मन्दिर के अन्दर सत्संग का ज्ञान-प्रकाश नहीं जाता तब तक वहाँ अज्ञानरूपी अन्धकार अपना एकछत्र साम्राज्य स्थापित रखता है। करोड़ों वासनाएँ बेचारे आत्मा को दबाये रखती हैं, असंख्य संस्कार इसे घोर मार्ग में भटका देते हैं। परन्तु जब सत्संग के इस अनोखे दीप की किरणें हृदय-मन्दिर में पहुँचती हैं तो एक क्षण में लाखों वर्षों का यह मोहमाया का अन्धकार छिन्न-भिन्न हो जाता है। यही तो है वह सत्संग का जादू जो सन्तों ने परखा है और हमारे सामने यह कहते हुए रखा है—

एक घड़ी आधी घड़ी, आधी सों पुनि आध।
तुलसी संगति साधु से, मिटें कोटि अपराध ।।

एक संस्कृत का कवि लिखता है—

भाग्योदयेन बहुजन्मार्जितेन सत्संगमं च लभते पुरुषो यदा वै।
अज्ञानहेतुमोहमदान्धकारविनाशं विधाय तदा हि उदयते विवेकः ।।

जन्म-जन्मान्तर के भाग्योदय हो जाने से जब सत्संग प्राप्त होता है उस समय अज्ञान के कारण मोह-मद का अन्धकार विनाश को प्राप्त हो जाता है और विवेक-ज्ञान का उदय हो जाता है।

अमूल्य ओषधि

सत्संग ओषधि के समान है। जैसे कोई व्यक्ति रोग से पीड़ित है और उसके कारण बुरी तरह से चिल्ला रहा है, उसी समय कोई वैद्य आकर उसे थोड़ी-सी दवाई दे देता है। दवाई का सेवन करते ही एक मिनट में वही व्यक्ति मुस्कराने लगता है जो एक मिनट पहले चीखें मार रहा था। ठीक इसी प्रकार जब मनुष्य इस दुनिया के झंझटों में बुरी तरह फँस जाता है, सांसारिक संतापों से सन्तप्त

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

होकर जब वह चीखने लगता है तो ऐसे घोर समय में सत्संग ही ऐसी अमोघ औषध है जो उसे सच्ची शान्ति प्रदान करती है। हजारों यातनाओं से पीड़ित और लाखों चिन्ताओं से चिन्तित व्यक्ति इस संजीवनी बूटी को पाकर सब चिन्ताओं और पीड़ाओं से मुक्त हो जाता है। उसकी चिन्ताएँ क्षण-भर में ही रफूचक्कर हो जाती हैं, फिर न मुकद्दमे याद आते हैं और न तृष्णा का ज्वार-भाटा। संसार में सबसे उत्तम कोई ओषधि है तो सत्संग ही है। विद्वानों ने लिखा है कि "सतां सङ्गो हि भेषजम्" सज्जनों का संग ओषधि है। इसीलिए कहा भी है—

संगति कीजे साधु की, हरे और की व्याधि।
ओछी संगत क्रूर की, आठों पहर उपाधि॥

आनन्द का स्रोत

संसार की ज्वालाओं में जलते हुए प्राणी यदि सुख चाहते हैं तो मैं उनको डंके की चोट से कहता हूँ उनको हिमालय की बर्फ से ढकी हुई चोटियों पर शान्ति नहीं मिलेगी, हिम की चट्टानों पर लेटने का साहस करने पर या बर्फ को ही अन्दर निगल जाने से शीतलता नहीं मिलेगी, सारा दिन गंगा के शीतल जल में गोता लगा जाने के बाद भी मानसिक अशान्ति दूर न हो सकेगी, एयरकण्डीशण्ड रूम में बन्द हो जाने पर भी आत्मिक शान्ति की कल्पना पूरी न हो सकेगी, चन्दन के बाग में जाकर वास करने से और सारे शरीर में चन्दन लेपने से भी जो शान्ति की कामना करता है वह मृग-मरीचिका में जल प्राप्त करने के सदृश है। शीतलता के भंडार चन्द्रलोक में पहुँचने पर भी शान्ति मिलना कठिन है, संसार की ठण्डी-से-ठण्डी सब ओषधियों को घोटकर एक साथ पी लेने पर भी शान्ति के घर दूर हैं। बेचारी ब्रह्मी, शङ्खपुष्पी, जल-जमनी बूटियों की पहुँच वहाँ कहाँ? फिर शान्ति का ठौर कहाँ है? शान्ति का सच्चा स्रोत सत्संग ही है। विद्वानों ने लिखा है—

चन्दनं शीतलं लोके चन्दनादपि चन्द्रमा।
चन्द्रचन्दनयोर्मध्ये शीतला साधुसंगतिः॥

"संसार में चन्दन ठण्डा पदार्थ है और चन्दन से भी चन्द्रमा अधिक शीतल है, परन्तु चन्दन और चन्द्रमा में मानव को मानसिक शान्ति देने या दुर्जन को सज्जन बना देने का सामर्थ्य कहाँ? चन्द्रलोक में जाने पर दुष्ट धर्मात्मा बन जायेंगे, चन्दन की वाटिका में जाकर भोगी योगी बन जायेंगे और हिमालय की बर्फ पर जा बैठने से अशान्ति की आग में जलते हुए आत्मिक शान्ति प्राप्त कर लेंगे, यह सर्वथा असम्भव है। दुष्टों को सज्जन बनाने का और आत्मिक शान्ति को प्राप्त करने का साधन चन्दन का बाग नहीं है, वह तो केवल सत्संग ही है। चन्दन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

से तो केवल वाह्य शरीर सुगन्धित होता है और अन्दर का जीवन नहीं बदलता। इसीलिए किसी ने युक्ति-संगत ही कहा है—

मलयाचलगन्धेन त्विन्धनं चन्दनायते।
तथा सज्जनसङ्गेन दुर्जनः सज्जनायते।।

अर्थात् "मलयाचल चन्दन के पर्वत की सुगन्ध से समीपस्थ ईंधन चन्दन के समान सुगन्धित हो जाता है परन्तु सज्जन के संग से दुर्जन सज्जन बन जाता है।" गोस्वामी तुलसीदास ने भी यथोचित कहा है—

सठ सुधरहिं सत्संगति पाई।
पारस परसि कुधातु सुहाई।।

सच्चा तीर्थ

मनुष्य को जो भवसागर से तरा देता है उसे तीर्थ कहा जाता है। महर्षि दयानन्द जी महाराज ने भी लिखा है "जनाः यैस्तरन्ति तानि तीर्थानि" अर्थात् मनुष्य जिनसे तर जाते हैं वे ही तीर्थ हैं। आजकल कुछ लोग गंगा आदि नदियों पर स्थित हरिद्वार, यमनोत्री, गंगोत्री, बद्रीनारायण, काशी-मथुरा आदि स्थानों को तीर्थ मान रहे हैं और इन तीर्थों पर स्नान करने से पाप से मुक्ति मान रहे हैं। नदियों में पाप काटने की मशीन नहीं लगी हुई है। वहाँ पाप उतरना तो कठिन है परन्तु गहरे जल में डूबना सरल है। बहुत-से लोग डूब भी जाते हैं। बेचारे साधारण लोगों को यह पता नहीं कि गंगा में नहाने से संसार का तर जाना सम्भव हो तो मेंढक और कछुवे-मछलियाँ क्यों न तर जावें जिनका पानी में ही घर है? पार उतारने वाला सच्चा तीर्थ तो सत्संग ही है। कहा भी है—

सत्संगः परमं तीर्थं सत्सङ्गः परमं पदम्।
तस्मात्सर्वं परित्यज्य सत्संगं सततं कुरु।।

अर्थ—"सत्संग परम तीर्थ है, सत्संग ही परम पद मोक्ष का साधन है, इसलिए सब दुर्व्यसनों को छोड़कर सत्संग करो।" निस्सन्देह सत्संग भवसागर से पार उतारने वाला है। एक घटना आपको सुनाता हूँ—

लाहौर में छज्जु का चौबारा प्रसिद्ध है। सब लोग कहते हैं—"जो सुख छज्जु के चौबारे, वह बलख न बुखारे।" यह चौबारा इतना प्रसिद्ध क्यों हो गया और उसके विषय में यह कहावत इतनी प्रसिद्ध क्यों हो गई? इसका कारण वहाँ प्रतिदिन होने वाला सत्संग था। सत्संग तो ख्याति का मूल है ही। उसी चौबारे में एक दिन सत्संग लगा हुआ था। नीचे से एक जोर की आवाज ऊपर पहुँची, किसी ने चिल्लाते हुए कहा "अच्छे संगतरे"। इस आवाज को सुनकर छज्जु भगत जी सत्संग में बैठे प्रेमियों से बोले "नीचे से जो बार-बार आवाज आ रही है क्या आप उसे सुन रहे हैं? क्या कह रहा है वह?" सब एक स्वर में बोले,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"महाराज ! वह तो अपने सन्तरे बेच रहा है, कोई विशेष बात नहीं है, आप सत्संग को जारी रखो।" छज्जु भगत जी इस उत्तर को सुनकर मुस्कराये और फिर बोले कि भाई, आप समझे नहीं, उसकी पुकार फिर सुनो। उसकी वही ध्वनि फिर कानों में पहुँची, परन्तु फिर भी सबने पहले वाला ही उत्तर दिया, "महाराज, वह अपने फल बेच रहा है।" इस उत्तर को सुनकर भगत जी कहने लगे, "साथियो ! वह फल नहीं बेच रहा है, वह तो बड़ा मार्मिक उपदेश दे रहा है। वह बार-बार चीख-चीखकर कह रहा है कि 'अच्छे संग तरे' अच्छी संगत में बैठने से मनुष्य तर जाता है।" कितना कमाल का उपदेश है ! यह बात सारगर्भित एवं सत्य है। जो सत्संग में बैठता है वह तर ही जाता है। वह मुक्ति को प्राप्त कर लेता है। जगद्गुरु शंकराचार्य जी महाराज लिखते हैं—

सत्संगत्वे निःसंगत्वं निःसंगत्वे निर्मोहत्वम्।
निर्मोहत्वे निश्चलत्वं निश्चलत्वे जीवन्मुक्तः॥

अर्थ—सत्संग से मनुष्य विषयों से छूट जाता है, संसार से निःसंग होने पर मोह दूर हो जाता है और मोह के छूटने पर सारी चंचलता दूर हो जाती है और जब निश्चल हो जाता है तो जीवन मुक्त हो जाता है। चाणक्य महाराज ने भी कहा है—

साधूनां दर्शनं पुण्यं तीर्थभूता हि साधवः।
कालेन फलति तीर्थं सद्यः साधुसमागमः॥

सज्जन पुरुषों का संग पुण्यकारक है। सज्जन ही सच्चे तीर्थ हैं। तीर्थ कहलाने वाले तीर्थ तो न जाने कब फल देंगे परन्तु साधुओं का संग तो तुरन्त फल देने वाला है। एक क्षण में ही सज्जनों की संगति पार लगाने वाली है। लिखा है—

"क्षणमिह सज्जनसङ्गतिरेका,
भवति भवार्णव-तरणे नौका॥"

सत्संगरूपी नाव क्षण-भर में संसार-सागर से पार उतरने के लिए एकमात्र साधन है। इसलिए किसी ने साफ कह दिया है—

मथुरा भावै द्वारिका, भावै जो जगन्नाथ।
साधुसङ्गति हरिभजन बिनु कछु न आवै हाथ॥

दो मीठे फल

विष्णुशर्मा महाविद्वान् ने अपने पंचतन्त्र नामक प्रसिद्ध ग्रन्थ में दो मीठे फलों का वर्णन इस प्रकार किया है—

संसारविषवृक्षस्य द्वे एव रसवत्फले।
काव्यामृतरसस्वाद संगमः सुजनैः सह॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अर्थ—"संसाररूपी विषवृक्ष के दो ही मीठे फल हैं। एक काव्य के अमृत का रसास्वादन करना और दूसरा सज्जनों के साथ संगति करना।"

यह संसार एक विष का पेड़ है। इस पर अनेक जहरीले फल लगे हुए हैं। जो उन फलों को खा लेता है वह ही पागल हो जाता है और हा-हाकार मचाने लगता है। जो व्यक्ति इस संसार-विषवृक्ष की छाया में आ जाता है वह ही आकुल, व्याकुल, विह्वल हो जाता है। किसी से पूछो वही दुःखी है; सब बेचैन हैं। कपिल मुनि भी लिख गये हैं—

"कोऽपि कुत्रापि सुखीति न।" कोई कहीं सुखी नहीं है। योगिराज पतञ्जलि जी ने योगदर्शन में लिखा है—"परिणामतापसंस्कारदुःखैर्गुणवृत्ति-विरोधाच्च दुःखमेव सर्वं विवेकिनः।" परिणाम, ताप, संस्कार और गुणवृत्ति-विरोध इन चार कारणों से पता चलता है कि संसार में सब कुछ दुःख-ही-दुःख है। इस दुःखमय संसार में किसी को सुख भी मिल सकेगा या नहीं? इसका उत्तर देते हुए विष्णु शर्मा विद्वान् कहता है कि यह ठीक है संसार विष का वृक्ष है परन्तु इस पर दो मीठे फल भी लगे हुए हैं। जो लोग उनका सेवन करते हैं वे आनन्द प्राप्त कर लेते हैं। वे मीठे फल सत्संग और स्वाध्याय हैं। संसार के विषयों के विषैले फल खाकर जो दुःख-शय्या पर पड़े रौरव नरक भोग रहे हैं उन्हें स्वाध्याय और सत्संग के मीठे फल पुनः स्वस्थ और सुखी कर सकते हैं। संसार के घोर अंगारों में जलते हुए दुःखी प्राणियों के बचने का उपाय है तो वह सत्संग ही है। किसी ने ठीक ही लिखा है—

आग लगी आकाश में, झड़ झड़ पड़ें अङ्गार।
सन्त न होते जगत में, जल मरता संसार॥

इसी प्रकार स्वाध्याय के बिना भी मानव का त्राण नहीं हो सकता। मानव के जीवन में सुख-शान्ति प्राप्त कराने के लिए स्वाध्याय सबसे मीठा फल है। ऋषियों का सत्संग हर समय मिलना कठिन है, परन्तु स्वाध्याय ऐसी चीज है जिससे हर समय लाभान्वित हो सकते हैं। यदि आज हम ऋषि पतञ्जलि और कणाद से मिलना चाहें तो नहीं मिल सकते, परन्तु उनके उपदेश से हम लाभ उठा सकते हैं। ऋषियों के ग्रन्थों का जो नित्यप्रति स्वाध्याय करता है वह अपनी सकल कामनाओं को पूर्ण करके जीवन को सफल बना लेता है। बुद्धिमानों का समय सत्संग-स्वाध्याय में ही व्यतीत होता है। पञ्चतन्त्र में लिखा है—

काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमताम्।
व्यसनेन च मूर्खाणां निद्रया कलहेन वा॥

अर्थ—वेदशास्त्र के पठनपाठन में बुद्धिमानों का समय व्यतीत होता है परन्तु मूर्खों का ताश-चौपड़, शराब, हुक्का आदि व्यसनों में, सोने और झगड़ों में जाता है। स्वाध्याय मनुष्य का प्राण है। स्वाध्याय के विषय में हम (योग विज्ञान,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रथम भाग में) यम-नियमों की व्याख्या करते हुए खोलकर लिख चुके हैं, अतः इसकी महिमा वहीं से देखें। वास्तव में ये सत्संग और स्वाध्याय ऐसे मीठे फल हैं जिनका रसास्वादन करके बुद्धिमान् पुरुष अपने जीवन को सार्थक बना लेते हैं।

ब्रह्मचर्य-रक्षा का अपूर्व साधन

मानव-जीवन की सबसे अमूल्य वस्तु ब्रह्मचर्य है। इस ब्रह्मचर्य की कृपा से मनुष्य विद्या, बल, तेज, आयु और यश का भण्डार बन जाता है। वज्र के समान शरीर, सिंह के तुल्य वक्षस्थल, हाथी की भाँति मस्ती-भरी चाल, सूर्य के समान देदीप्यमान मुखमण्डल, मेघ जैसी ध्वनि, सुडौल, सुन्दर गठी हुई भुजाओं के निर्माण का मूल कारण ब्रह्मचर्य-साधन ही तो है। इसी वीर्यरक्षा के प्रभाव से मनुष्य ब्रह्मलोक को भी विजय कर लेता है। यही जीवन का प्राण, शक्तियों का आगार, आनन्द का स्रोत, सफलता का रहस्य और सब सुधारों का सुधार है। इसके बिना जीवन नीरस, मुर्दे के समान हो जाता है, शरीर अस्थिपिञ्जर मात्र हो जाता है, मानो अभी कब्र से उठाकर लाया गया हो। चेहरा कान्तिरहित और पीला पड़ जाता है, गाल पिचक जाते हैं, आँखों पर चश्मा चढ़ जाता है, स्मरणशक्ति विलुप्त हो जाती है। सिर में दर्द रहने लगता है, कमर झुक जाती है, छाती बैठ जाती है, उठते-बैठते अन्धेरी आती है। कई युवक यह कहते हुए सुनाई देते हैं कि जब उठते हैं तो तारे-से टूटते हैं, तारे-से ही क्या, ब्रह्मचर्य के अभाव में कुछ दिनों के बाद चाँद और सूरज भी टूटने लगते हैं। खाँसी, नजला, क्षय, यक्ष्मा, मृगी, मूर्छा, पागलपन, बवासीर, मधुमेह और भगन्दर आदि रोग इन्हें आ घेरते हैं, आयु घट जाती है। इस प्रकार सारे जीवन का खेल बिगड़ जाता है। इसीलिए हमारे ऋषियों ने ब्रह्मचर्य-पालन पर सबसे अधिक बल दिया है।

ब्रह्मचर्य का सबसे बड़ा शत्रु दूषित विचार हैं। इस शरीर में भगवान् ने वीर्य को इतना सुरक्षित रखा है कि कितनी ही तेज वस्तु का प्रहार शरीर पर किया जावे परन्तु वीर्य शरीर से बाहर नहीं निकल सकता। तेज तलवार के तीक्ष्ण प्रहारों से त्वचा कट जायेगी, रक्त बह निकलेगा, मांस निकल पड़ेगा, हड्डी कट जायेगी परन्तु वीर्य नाम की वस्तु बाहर नहीं निकलेगी। गन्दे विचारों के एक ही प्रहार से वीर्य एक ही पल में शरीर से बाहर निकल जाता है। गन्दे विचारों को छोड़े बिना ब्रह्मचारी रहना असम्भव है। इन दूषित विचारों की जननी कुसंग है। इसलिए कुसंग का त्याग किए बिना कोई सात जन्म में भी ब्रह्मचारी नहीं रह सकता। इसी स्थान पर यह भी समझ लेना चाहिए कि जैसे ब्रह्मचर्य का सबसे बड़ा शत्रु दूषित विचार हैं वैसे ही ब्रह्मचर्य का सबसे बड़ा पालक सुविचार हैं और इन सुविचारों की जननी सत्संग है। यह सत्संग ब्रह्मचर्य-पालन के लिए ब्रह्मचारी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

की माँ ही है। जब भी विषय-वासनाओं की सेना मनुष्य को धर दबोचे उसी समय इस माँ की शरण में पहुँच जाना चाहिए। इसकी शरण में आने पर फिर कोई खतरा नहीं रहेगा। बहुत-से लोग यह कहते सुनाई देते हैं कि ब्रह्मचारी रहना असम्भव है, कामदेव को जीतना बड़ा कठिन है। कुछ लोग घर पर ब्रह्मचर्य-पालन में असफल हो जाते हैं और इसी कारण वे निराश होकर इस मार्ग को भी छोड़ देते हैं। अपने पवित्र ब्रह्मचर्य व्रत को बीच में ही तोड़ देते हैं। ऐसे लोगों की सेवा में मैं कहना चाहता हूँ कि जिस समय बहुत यत्न करने पर भी ब्रह्मचर्य-पालन में सफलता नहीं मिलती तो निराशा स्वाभाविक है, परन्तु निराश होने की आवश्यकता नहीं। यदि आप हृदय से ब्रह्मचर्य की रक्षा करना चाहते हैं तो मैं इसका अमोघ उपाय बतलाता हूँ—आप उस स्थान को दो-चार मास या एक दो वर्ष के लिए छोड़कर किसी गुरुकुल या किसी योगी, ब्रह्मचारी, महात्मा के आश्रम में पहुँच जायें और श्रद्धापूर्वक उनके सत्संग में रहें। आप देखेंगे कि जो कार्य बहुत यत्न करने पर सिद्ध नहीं हो रहा था वह अपने-आप बिना किसी दिक्कत के सफल हो जायेगा। किसी ने ठीक ही कहा है—

"महाजनस्य संसर्गः कस्य नोन्नतिकारकः।
पद्मपत्रस्थितं वारि धत्ते मुक्ताफलश्रियम्।।"

अर्थात् महानात्माओं का संसर्ग किसकी उन्नति नहीं करा देता! कमल के पत्ते पर स्थित जल मोती की शोभा को धारण कर लेता है।" ब्रह्मचर्य की पूर्ण सफलता के लिए हमारी "ब्रह्मचर्य-सन्देश" नामक पुस्तक पढ़ें।

योगसिद्धि का अद्वितीय उपाय

जीवन में सच्ची शान्ति और मोक्ष को प्राप्त करने का एकमात्र साधन योगाभ्यास ही है। योग का अर्थ चंचल चित्त को रोकना है। चित्त की वृत्तियों को रोककर ही मनुष्य आत्मा और परमात्मा के विज्ञान का पता लगा सकता है, सब क्लेशों को नष्ट कर सकता है, सब मल, विक्षेप, आवरणों को नष्ट करके अपने आन्तरिक आध्यात्मिक कोष को प्राप्त कर सकता है। ध्यान-समाधि के बिना मनुष्य का जीवन वासनाओं का घर बनकर निरर्थक हो जाता है।

ध्यान-समाधि सिद्ध करने के लिए लोग न जाने क्या-क्या साधन करते हैं, तरह-तरह के जप-तप करने पर, विविध प्रकार के व्रत-अनुष्ठान करने पर भी सफलता नहीं मिलती, पर्वतमालाओं की एकान्त कन्दराओं में भी मन चंचल हो जाता है। वर्षों तक प्राणायाम करने पर और अभ्यास-वैराग्य का साधन करते हुए भी जब मन नहीं रुकता तो साधक निराश हो जाता है। जिन लोगों को ध्यान-समाधि में सफलता नहीं मिलती, मैं उनको एक अचूक उपाय बतलाना चाहता हूँ, उन्हें अवश्य सफलता मिल जायेगी। वर्षों का काम महीनों में और महीनों का

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
कार्य दिनों में पूरा हो जायेगा। कई जन्मों का काम कुछ ही समय में पूरा कराने वाला यह अनुपम साधन सत्संग ही है। जिसका मन समाधि में नहीं रुकता, वह घर को कुछ दिन के लिए छोड़कर किसी वीतराग योगिराज के चरणकमलों में पहुँच जाये या किसी योगाश्रम में चला जाये और वहाँ पर साधना करे। उस साधक की सारी निराशा दूर हो जायेगी और उसकी प्रबल कामना पूर्ण हो जायेगी। अन्दर का अन्धेरा नष्ट होकर प्रकाश मिल जायेगा। किसी अनुभवी, योगी द्वारा प्रदत्त दिव्य नेत्र से आन्तरिक जगत् के सब पदार्थों का साक्षात्कार शीघ्र ही हो जायेगा। यह अनूठा नुस्खा परखा हुआ है, आप भी परखकर देखें।

सत्संगति क्या नहीं कर देती !

सत्संग की जितनी स्तुति करें थोड़ी है। इसके लाभ अनन्त हैं। इसके चमत्कार निराले हैं। भर्तृहरि महाराज नीतिशतक में लिखते हैं—

जाड्यं धियो हरति सिञ्चति वाचि सत्यं,
मानोन्नतिं दिशति पापमपाकरोति।
चेतःप्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्त्तिं,
सत्संगतिः कथय किं न करोति पुंसाम्॥

"कहो ! पुरुषों का सत्संगति क्या कुछ नहीं कर देती ! बुद्धि की जड़ता को हर लेती है, वाणी में सत्य का सिञ्चन करती है, पापों को दूर करती है, चित्त को प्रसन्न करती है, चारों दिशाओं में कीर्ति को विस्तृत करती है।"

सत्संगति की कृपा से मनुष्य का क्या-कुछ हो जाता है—यह मत पूछो, बल्कि यह पूछो कि सत्संगति से मनुष्य का क्या-कुछ नहीं हो जाता। दुनिया की कौन-सी चीज है जो इससे प्राप्त नहीं हो जाती, कौन-सा गुण है जो इससे नहीं मिल जाता !

१. सबसे पहले इससे बुद्धि की मूढ़ता समाप्त हो जाती है। बुद्धि सात्त्विक और निर्मल हो जाती है। जब मनुष्य की बुद्धि निर्मल हो गई तो और क्या शेष रह गया। प्रज्ञालोक के लिए मनुष्य को कितने तप तपने पड़ते हैं, क्योंकि विवेक-ज्ञान के बिना संसार में ही गोते लगाने पड़ते हैं। विवेकख्याति ही मोक्ष का उपाय है और क्लेशकर्मों को समाप्त करने में समर्थ है।

२. वाणी में सत्य का संचार हो जाता है। झूठ के परित्याग और सत्य के ग्रहण करने से मनुष्य की वाणी अमोघ हो जाती है अर्थात् सब-कुछ प्राप्त कराने वाली हो जाती है। तब तक ही मनुष्य के कार्य असफल होते हैं जब तक वह असत्य नहीं छोड़ता। मन, वचन, कर्म से सत्य का पुजारी बनने पर मनुष्य संसार को जीत लेता है। वह परमेष्ठिनी वाक् सत्संग से ही सुसंस्कृत, मधुर और सत्यवादिनी बनती है।

३. जीवन का उत्थान होता चला जाता है, असंख्य गिरे हुए उठते हैं, डाकू

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
ऋषि बनते हैं, हजारों भूले-भटके सच्चा मार्ग प्राप्त करते हैं, लाखों निराश-हताशों को आशा का जीवन मिलता है।

४. समस्त पापों के ढेरों का नाश हो जाता है। सत्संग-रूपी ज्ञान की गंगा में नहाने के बाद मन में मैल नहीं रहते। करोड़ों जन्मों की वासना चकनाचूर हो जाती है।

५. चित्त सदा फूल की भाँति खिला रहता है। प्रसन्नता एवं आह्लाद जीवन के अभिन्न अङ्ग बन जाते हैं।

६. कीर्ति चारों दिशाओं में फैल जाती है। जब फूल खिलेगा तो सुगन्धि क्यों न फैलेगी! कुसंगति से अपकीर्ति और सत्संगति से कीर्ति अपने-आप फैल जाती है। इस प्रकार इहलौकिक और पारलौकिक सारे ही लाभ सत्संग द्वारा प्राप्त हो जाते हैं। मनुस्मृति में मनु महाराज लिखते हैं—

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्यायशोबलम्॥

जो अभिवादनशील है और नित्य वृद्धों (विद्वानों) की सेवा (सत्संग) में रहता है, उसके आयु, विद्या, यश और बल बढ़ते चले जाते हैं। इसलिए नीतिकारों ने कहा है—

"सतां हि संगः सकलं प्रसूते"

"सज्जनों के संग से सब-कुछ मिल जाता है।" संसार में लोग कामधेनु की खोज करते हैं, परन्तु आज तक संसार के लोगों को यह पता नहीं चला कि कामधेनु कहाँ है और कैसी है। ऋषियों ने इसी सत्संग को, सज्जनों की वाणी को कामधेनु कहा है—"वाक् वै कामधुक्" वाणी ही कामधेनु है। लोग कल्पवृक्ष को भी नहीं जानते, लोगों को आज तक कल्पवृक्ष का यथोचित ज्ञान नहीं है। कुछ लोग क्षीरसागर में नवरत्न द्वीप मानते हैं और वहीं पर कामधेनु और कल्पवृक्ष की कल्पना करते हैं। परन्तु, जैसे इनकी वैतरणी नदी संसार के मानचित्र में कहीं नहीं है, उसी प्रकार से इनका क्षीरसागर और कल्पवृक्ष भी कहीं नहीं हैं। असली कल्पवृक्ष ऐतरेय ब्राह्मण ग्रन्थ में बतलाया गया है—एतरेय ऋषि लिखते हैं—"यज्ञो वै कल्पतरुः"—यज्ञ ही कल्पवृक्ष है। यज्ञ का अर्थ है देवपूजा, सङ्गतिकरण और दान। देवपूजा—जो सब देवों का देव परमात्मा है उसकी उपासना (संग) करना, माता-पिता, आचार्य और विद्वानों की सेवा व संग करना, और सूर्य एवं चन्द्र आदि भौतिक देवों से यथोचित लाभ उठाना। संगतिकरण—विद्वानों और सत्य शास्त्रों के संग से लाभ उठाना। दान—यज्ञ करके घृत आदि पदार्थों की सुगन्धि को फैलाना। इस प्रकार हम देख रहे हैं कि यज्ञ का अर्थ हर समय सत्संगति में रहना है। उसकी सब कामनायें पूर्ण क्यों न हो जायें? जो यज्ञमयी नौका पर चढ़ गये, वे सकल कामनाओं को पूर्ण करके भवसागर से पार

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उतर गये; और जो इस पर नहीं चढ़ पाते वे भावसागर में डूबते रहते हैं। वेद कहता है—

न ये शेकुर्यज्ञियां नावमारुहमीमव ते न्यविशन्त केपयः ।। ऋ० १०।४४।६।।

जो इस यज्ञीय नाव पर न चढ़ सके वे इस संसार के दलदल में ही फँसते चले जाते हैं। सत्संगति के समान सकल कामनाओं को पूर्ण करने वाला और भवसागर से पार उतारने वाला साधन दूसरा नहीं है। सत्सङ्गति की किसी से तुलना नहीं की जा सकती क्योंकि यह अतुलनीय है। धन-धान्य, मकान-जायदाद, पुत्र, कलत्र, भाई-बन्धु, माता-पिता, लोक-परलोक, स्वर्गलोक, देवलोक सब इससे नीचे हैं। लिखा भी है—

तात स्वर्ग अपवर्ग सुख, धरिये तुला इक संग।
तुले न ताहि सकल मिली, जो लाभहि सत्संग।।

जब प्रकृति की अनमोल दवाइयाँ आपको आसानी से उपलब्ध हैं तो—गोली, पुड़िया, कैप्सूल या इन्जेक्शन की क्या जरूरत है ?

घर का वैद्य

लेखक—सुनील शर्मा

१. घर का वैद्य आंवला	३.५०	११. घर का वैद्य दूध-घी	३.५०
२. घर का वैद्य नीम	३.५०	१२. घर का वैद्य दही-मट्ठा	३.५०
३. घर का वैद्य गन्ना	३.५०	१३. घर का वैद्य नमक	३.५०
४. घर का वैद्य प्याज	३.५०	१४. घर का वैद्य हल्दी	३.५०
५. घर का वैद्य लहसुन	३.५०	१५. घर का वैद्य हींग	३.५०
६. घर का वैद्य नीबू	३.५०	१६. घर का वैद्य बेल	३.५०
७. घर का वैद्य तुलसी	३.५०	१७. घर का वैद्य बरगद	३.५०
८. घर का वैद्य पीपल	३.५०	१८. घर का वैद्य मूली	३.५०
९. घर का वैद्य आक	३.५०	१९. घर का वैद्य गाजर	३.५०
१०. घर का वैद्य सिरस	३.५०	२०. घर का वैद्य अदरक	३.५०

बीसों पुस्तकें चार सुन्दर जिल्दों में १४०.००

गोविन्दराम हासानन्द, नई सड़क, दिल्ली-११०००६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हमारे विशिष्ट प्रकाशन

स० आनन्द स्वामी कृत पुस्तकें

प्रभु दर्शन	१२.००
तत्त्वज्ञान	१५.००
प्रभुमिलन की राह	१५.००
घोर घने जंगल में	१५.००
मानव और मानवता	२०.००
उपनिषदों का सन्देश	१२.००
दो रास्ते	१२.००
यह धन किसका है ?	१२.००
बोध कथाएँ	१२.००
दुनिया में रहना किस तरह	७.००
मानव-जीवन-गाथा	५.५०
प्रभुभक्ति	५.००
महामन्त्र	५.००
एक ही रास्ता	५.००
भक्त और भगवान्	५.००
आनन्द गायत्री-कथा	४.००
सुखी गृहस्थ	३.५०
सत्यनारायणव्रत-कथा	३.००
शंकर और दयानन्द	४.००

श्री रणवीर लिखित

आनन्द स्वामी जीवनी (उर्दू)	१०.००

स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती कृत

महाभारतम् (तीन भागों में)	६००.००
वाल्मीकि रामायण	१००.००
चाणक्यनीति दर्पण	५०.००
प्रार्थना लोक	२५.००
प्रार्थना प्रकाश	४.००
प्रभात वन्दन	४.००
दिव्य दयानन्द	६.००
मर्यादा पुरुषोत्तम राम	१०.००
कुछ करो कुछ बनो	८.००

विद्यार्थियों की दिनचर्या	५.००
ब्रह्मचर्य गौरव	५.००
वैदिक विवाह पद्धति	४.००
आदर्श परिवार	८.००
ऋग्वेद सूक्ति-सुधा	२५.००
अथर्ववेद सूक्ति-सुधा	१५.००
यजुर्वेद-सूक्ति-सुधा	१२.००
सामवेद सूक्ति-सुधा	१२.००
ऋग्वेदशतकम्	४.००
यजुर्वेदशतकम्	४.००
अथर्ववेदशतकम्	४.००
सामवेदशतकम्	४.००
भक्ति संगीत शतकम्	३.००
चमत्कारी ओषधियाँ	६.००
घरेलू ओषधियाँ	६.००

प्रो० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

वैदिक विचारधारा का वैज्ञानिक आधार	५०.००
सत्य की खोज	५०.००
ब्रह्मचर्य सन्देश	१५.००

पं० मदनमोहन विद्यासागर

संस्कार समुच्चय	४५.००
सत्यार्थ सरस्वती	२५.००
ईश्वर प्रत्यक्ष	६.००

डॉ० भवानीलाल भारतीय

श्रीकृष्ण चरित	२५.००
श्यामजी कृष्ण वर्मा	२४.००
आर्यसमाज विषयक साहित्य परिचय	२५.००

स्वामी वेदानन्द सरस्वती

ऋषि बोध कथा	६.००
ईशोपनिषद्	४.५०

डॉ० प्रशान्त वेदालंकार

धर्म का स्वरूप	३५.००

गोविन्दराम हासानन्द, नई सड़क, दिल्ली-६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पं० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

वैदिक विचारधारा का वैज्ञानिक आधार	५०.००
सत्य की खोज	५०.००
ब्रह्मचर्य सन्देश	१५.००
वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्व	४०.००
From Old Age to Youth	78.00
एकादशोपनिषद्	७५.००
उपनिषद् प्रकाश	६५.००
संस्कार-चन्द्रिका	५०.००
बुढ़ापे से जवानी की ओर	४०.००
होमियोपैथिक के मूल सिद्धान्त	३०.००
होमियोपैथिक औषधियाँ चित्रण	६०.००
रोग उनकी होमियो० चिकित्सा	७५.००
श्रीमद् भगवद् गीता	५०.००

पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय-साहित्य

आस्तिकवाद	१५.००
इस्लाम के दीपक	१२.००
मीमांसा प्रदीप	१०.००
आर्यसमाज	८.००
वैदिक धर्म और समाज	६.००
वैदिक मान्यतायें	६.००
इस्लाम और आर्यसमाज	६.००
हम क्या खायें ? घास या मांस	६.००
कर्मफल सिद्धान्त	४.००
वेद प्रवचन	२०.००
भारतीय पतन और उत्थान	५.००
शेक्सपियर के नाटक (सम्पूर्ण ३७ नाटक) तीन भाग	१५.००

पं० उदयवीर शास्त्री

सांख्य दर्शन का इतिहास	५०.००
वेदान्त दर्शन का इतिहास	४०.००
ब्रह्मसूत्र (वेदान्त)	८०.००
सांख्य सिद्धान्त	४०.००
सांख्य दर्शन	२५.००
वैशेषिक दर्शन	४०.००
न्याय दर्शन	४०.००
योग दर्शन	४० ००

पं० सत्यकेतु विद्यालंकार कृत

आर्यसमाज का इतिहास (भाग १)	१००.००
,, ,, (भाग २)	११०.००
,, ,, (भाग ३)	१००.००
,, ,, (भाग ४)	१००.००
प्राचीन भारतीय इतिहास का वैदिक युग	२८.००
दक्षिण पूर्वी और दक्षिणी एशिया में भारतीय संस्कृति	२३.००
म० एशिया व चीन में भारतीय ,,	२०.००
प्राचीन भारत	२८.००
भारतीय संस्कृति का विकास	२४.००
प्राचीन भारत का धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक जीवन	२४.००
एशिया का आधुनिक इतिहास	४४.००
प्रमुख राज्यों के संविधान	२४.००
समाज शास्त्र	३०.००
चाणक्य	२२.००
पतन और उत्थान	२६.००
सविता देवता भगवद्दत्त	३५.००
बृहस्पति देवता भगवद्दत्त	४०.००

स्वामी योगेश्वरानन्द सरस्वती कृत

आत्म विज्ञान	हिन्दी	४०.००
	अंग्रेजी	३५.००
बहिरंग योग	हिन्दी	४५.००
	अंग्रेजी	३५.००
ब्रह्म विज्ञान	हिन्दी	७५.००
	अंग्रेजी	३५.००
निर्गुण ब्रह्म	हिन्दी	२५.००
दिव्य ज्योति	हिन्दी	४०.००
प्राण विज्ञान	हिन्दी	२५.००
	अंग्रेजी	३०.००
दिव्य शब्द विज्ञान	हिन्दी	४०.००
व्याख्यान माला (तीन भाग)	हिन्दी	८५.००

गोविन्दराम हासानन्द नई सड़क दिल्ली-६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महामुनि कृष्णद्वैपायन व्यासजी प्रणीत

महाभारतम्

महाभारत धर्म का विश्वकोश है। व्यासजी महाराज की घोषणा है कि जो कुछ यहाँ है, वही अन्यत्र है, जो यहाँ नहीं है वह कहीं नहीं है। इसकी महत्ता और गुरुता के कारण इसे पञ्चम वेद कहा जाता है।

वेद को छोड़कर सभी वैदिक ग्रन्थों में प्रक्षेप हुए हैं। महाभारत भी इस प्रक्षेप से बच नहीं सका। महाभारत की श्लोक संख्या बढ़कर एक लाख पहुँच गई है। इसमें असम्भव गप्पों, अश्लील कथाओं, विचित्र उत्पत्तियों अप्रासङ्गिक कथाओं को ठूँसा गया। इतने बड़े ग्रन्थ को पढ़ना कठिन हो गया।

आर्यजगत् के ही नहीं भारत के प्रसिद्ध विद्वान्

स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

द्वारा तैयार एक विशिष्ट संस्करण।

इस ग्रन्थ में असम्भव, अश्लील और अप्रासांगिक कथाओं को निकाल दिया गया है। लगभग १६,००० श्लोकों में सम्पूर्ण महाभारत पूर्ण हुआ है। श्लोकों का तार-नम्य इस प्रकार मिलाया गया है कि कथा का सम्बन्ध निरन्तर बना रहता है।

☐ यदि आप अपने प्राचीन गौरवमय इतिहास की, संस्कृति और सभ्यता की, ज्ञान-विज्ञान की, आचार-व्यवहार की गौरवमयी झाँकी देखना चाहते हैं,

☐ यदि योगिराज कृष्ण की नीतिमत्ता देखना चाहते हैं,

☐ यदि प्राचीन समय की राज्य-व्यवस्था की झलक देखना चाहते हैं,

☐ यदि आप जानना चाहते हैं कि क्या कौरवों का जन्म घड़ों में से हुआ था? क्या द्रौपदी का चीर खींचा गया था, क्या एकलव्य का अंगूठा काटा गया था, क्या युद्ध के समय अभिमन्यु की अवस्था सोलह वर्ष की थी, क्या कर्ण सूतपुत्र था, क्या जयद्रथ को धोखे से मारा गया आदि

☐ यदि आप भ्रातृप्रेम, नारी का आदर्श, सदाचार, धर्म का स्वरूप, गृहस्थ का आदर्श, मोक्ष का स्वरूप, वर्ण और आश्रमों के धर्म, प्राचीन राज्य का स्वरूप आदि के सम्बन्ध में जानना चाहते हैं, तो एक बार इस ग्रन्थ को पढ़ जाइए।

विस्तृत भूमिका, विषय-सूची, श्लोक-सूची आदि से युक्त इस महान् ग्रन्थ का मूल्य है केवल ६००) रुपये। तीन भाग।

गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली-६

प्रकाशक-मुद्रक विजयकुमार ने सम्पादित कर अजय प्रिंटर्स, दिल्ली-३२ में मुद्रित करा वेदप्रकाश कार्यालय, ४८०८ नयी सड़क, दिल्ली से प्रसारित किया।
Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi